

સીરતે ખીખી નફીસા તાહેરા

(બીબી નફીસા કી કહાની)



www.markazahlesunnat.com

સંપાદક

ખલીફાએ મુફ્તીએ આગમે હિન્દ, મુનાઝિરે એહલે સુન્નાત, માહિરે રઝવિયાત,

અલ્લામા અબ્દુસ્સતાર હમદાની

“મસ્જિદ” પોરબંદર (ગુજરાત)

નાશિર



મરકઝે એહલે સુન્નાત બરકાતે રખા

ઇમામ અહમદ રઝા રોડ, મેમનવાડ, પોરબંદર (ગુજરાત)

तेरी नस्ले पाक में है बर्या बर्या नूर का,
वू है ऐने नूर, तेरा सब घराना नूर का.

(अज : आला हजरत)

नबी की आल का नूरी मुकद्दस वो घराना है,
नबी की आल का सद्का जमाना जाता पलता है.

(अज : 'मस्ज़ि' हमदानी)

सीरते बीबी नज़ीसा ताहेरा (बीबी नज़ीसा की कहानी)

मुरत्तिब

अली-मुस्तीअे आज़मे हिंद,
मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात,

अल्लामा अब्दुससतार हमदानी

“मस्ज़ि” (अरकाती - नूरी) पोरबंदर (गुजरात)

नाशिर



मस्ज़ि अहले सुन्नत अरकाते रज़ा

धमाम अहमद रज़ा रोड, मेमन वाड, पोरबंदर (गुजरात)

Website :- www.markazahlesunnat.com

Email :- hamdani78692@gmail.com

Mob :- 9879303557, 9687525990, 9722146112

जुम्हा हुक्क बहक्के नाशिर महज़्ज़ हें

नाम किताब : “सीरते बीबी नज़ीसा ताहेरा”
रहीअल्लाहो तआला अन्ह
मुरत्तिब : अली-मुस्तीअे आज़मे हिंद,
मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात,
अल्लामा अब्दुससतार हमदानी
“मस्ज़ि” (अरकाती-नूरी)
कम्पोज़िंग : हाज़िज़ मुहम्मद धमरान हबीबी
(मस्ज़ि - पोरबंदर)
सने तजाअत : ध.स. २०१४ - डिसेम्बर
ताअदाद : ११०० (अेक हज़र, अेक सो)
नाशिर : मस्ज़ि अहले सुन्नत अरकाते रज़ा
धमाम अहमद रज़ा रोड, मेमनवाड,
पोरबंदर (गुजरात)

-: मिलने के पते :-

- (1) Mohammadi Book Depot. 523, Matia Mahal. Delhi
- (2) Kutub Khana Amjadia. 425, Matia Mahal. Delhi
- (3) Farooqia Book Depot. 422/C, Matia Mahal. Delhi
- (4) Maktaba-e-Raza. Dongri. Bombay
- (5) New Silver Book Depot. Mohammad Ali Road. Bombay
- (6) Maktaba-e-Rahmania. Opp & Dargah Aala Hazrat-Bareilly
- (7) Kalim Book Depot - Khas Bazar, Tin Darwaja, Ahmedabad

सय्यद बीबी नफीसा की सय्यी कहानी

सिखिलये नसब :- सय्यद नफीसा भिन्ते सय्यद हसन अनवर भिन गैद भिन सय्यदना धमाम हसन भिन सय्यदना मौला अली मुश्किल कुशा (रदीअल्लाहो तआला अन्हुम अजमर्धन)

विलादते मुबारका :- हि.स. १४५ में मक्का मुकर्रमा में गीनत अङ्गाये जानदान हुये.

सीरते शरीफा :- मदीना तय्यबा में आप की घनादतो रियाजत की गिंदगी शुरू हुय. अपने नातवां और कमजोर जिस्म को अल्लाह तआरक व तआला और उस के महबूब सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम की रजामंदी और पुशानूदी के लिखे पक्कू इरमा दिया था. घनादत का ये हाल था के दिन को हमेशा रोजा रपतीं और रात घनादते घलाही में गुजार देतीं. आप की भतीजू बीबी गीन्नत इरमाती हैं के चालीस साल तक मैंने बीबी नफीसा की फिदमत की, मगर इस अर्से में कभी आप को न रात में सोते देभा, न दिन में सिवाय अय्यामे ममनूआ के बे-रोजा देभा. आप ने कुल तीस (30) हज अदा इरमाये और धन में से अक्सर पैदल सफर कर के अदा इरमाये. आप जोड़े घलाही से बेहद रोया करती थीं. हजरत बीबी गीन्नत से किसी ने पूछा के बीबी नफीसा की जोराक

कितनी थी ? इरमाया के तीन दिन में अेक रोटी. अेक रिवायत में थूं आया है के सिर्फ अेक लुकमा तनापुल इरमातीं. आप के मुसल्ले के छींके में अेक भरतन मुअल्लक था. जिस चीज की आप को प्वाहिश होती, वो चीज पुदा की कुदरत से उस भरतन में से मिल जाती थी. हजरत बीबी गीन्नत इरमाती हैं के अेक रोज मैंने हजरत सय्यदा की फिदमत में अर्ज की के ये क्या मआमला है ? घरशाह इरमाया के जो अल्लाह तआला का हो जाता है, तो पुदावन्दे करीम तमाम चीजें उस के कब्जे में दे देता है.

हरभारे रसूल में मकबूलियत

जब आप सगीर सन यानी छोटी उम्र की थीं, तब आप के वालिदे माजिद हजरत सय्यद हसन अनवर रहमतुल्लाहो तआला अलयहे आप को सज्ज गुंभद वाले प्यारे आका रहमतुल-लिल-आलमीन सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम के रोजाये पाक पर ले कर हाजिर हो कर अर्ज किया के या रसूलल्लाह ! मैं अपनी भेटी नफीसा से रागी हूं. आप के वालिदे माजिद इस तरह रोजाये अकदस पर हाजिर हो कर खंड रोज तक अर्ज करते रहे. अेक भरतना हुजुरे अकदस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम ने प्वाज में अपने जमाले जहां आरा से मुशरर्फ इरमा कर घरशाह इरमाया के “या हसनो ! अना रागिथिन अन भिन्तिका नफीसता भेरिज-का अन्हा-वल-हकको

सुल्हानहू- रागिथिन-अन्हा-भेरिगाथा-अन्हा” यानी “में तुम्हारी भेटी नहीसा से पुश हूं तुम्हारे घस से पुश होने की वजह से, अल्लाह तआला घस से पुश है मेरे घस से पुश होने की वजह से.” अल्लाहु अकबर ! घस से भटकर मकबूलियत की ओर कौन सी सनद हो सकती है.

आप का निहाह

आप का अकद हजरत घस्हाक घने घमाम जाकर सादिक रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा से हुवा. हजरत घस्हाक भी बहुत भडे जुगुर्ग और साहिबे करामत व विलायत थे. बहुत हदीसें आप से रिवायत की गई हैं. मोहदिसीने किराम आप को सीकातुरावी यानी मोअतजर रावी में मुलककल करते हैं. हजरत बीबी नहीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा से उन के दो भय्ये तवल्लुद हुये. अक का नाम कासिम और अक का नाम उम्मे कुलसूम रपा गया था. बीबी नहीसा अपने शौहर हजरत घस्हाक के साथ हि.स. १८३ में मिस्र तशरीफ लाई. वहां के लोगों ने भडी घग्गतो हुरमत के साथ घन का घस्तिकभाव किया. मिस्र के ताजिरो के भादशाह जमालुदीन अब्दुल्लाह ने अपने अक मकान में उन के कयाम का भंदोभस्त किया.

बीबी नहीसा की करामत

मागूर लडकी तंदुरस्त हो गई

आप के पडोस में अक यहूदी का मकान था. उस की अक लडकी पांव से बिलकुल अपाहिज थी. लडकी की माँ ने अक भरतभा हम्माम में जाने का घरादा किया. भेटी से कहा के अगर तूं मेरे साथ आना चाहती है, तो तुझे वहां ले चलूं. भेटी ने कहा के पैरो की मागूरी की वजह से हम्माम तक आने की मुश में हिम्मत नहीं. उस की वालिदा ने कहा के क्या तू तन्हा मकान में रहे सकेगी ? लडकी ने जवाब दिया के हमारे पडोस में बीबी नहीसा रहेती हैं. तुम उन से घजगत लेकर अपनी वापसी तक मुझे उन के दरे मुभारक पर छोड जाओ. यहूदिया ने आप की पिदमत में हागिर हो कर घजगत ली और अपनी मागूर लडकी को आप के मकान में अक जगह बिठा दिया. ग़ोहर की नमाग के वक्त सय्यदा बीबी नहीसा ने पुगू फरमाया. पुगू का टपका हुवा पानी भटकर मागूर लडकी के पैरो के नीचे से गुगरा. पानी का गुगरना था के मागूर लडकी कौरन भडी हो कर चलने लगी. जल उस की माँ हम्माम से वापस आई, तो अजुल मग़र देजा. वो लडकी के जिस के घलाज के लिअे उस ने दुनिया भर की भाक छान मारी थी. भडे भडे अतिवजा और हकीम उस के घलाज से आगिर हो चुके थे और साइ जवाब दे दिया था के ये बीमारी ला-

घलाज है. मुद्दतुल उमर तेरी जेटी ऐसी ही मागूर और लुंज रहेगी. यहुदिया अपनी जेटी को चलते फिरते देखने की मुतमन्नी थी. उस की आँपें घस के लिये तरस रही थीं और घसी तमन्ना के पूरा होने के लिये वो हजरों दीनार अर्घ कर चुकी थी. लेकिन हाजिक हकीम ने घस बीमारी को ला-घलाज बनाकर यहुदिया को जिलकुल मायूस और ना उम्मीद बना दिया था. आज उस की तमन्ना के उजडे हुये यमन में जादे जहार आध. गुलहाये मुराद से अपने दामन को बरा हुवा देख कर उस का दिल भाग भाग हो गया. हसरत और ना-उम्मीदी का दाग धूल हो गया. क्या देखती है के वही मागूर और लुंज जेटी अपनी माँ के धंतजर में भडी है. यहुदिया के तअज्जुज की कोध धन्तिहा न रही. जेटी से पूछती है के तुम्हे कौन सी अकसीर शिफा मिल गध के घस ला-घलाज मर्ग से तुम्ह को नजात हासिल हो गध. जेटी ने जवाब दिया के ऐ मेरी शफीक माँ ! ये सज्ज बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा के पुगू के टपके हुये मुजारक पानी का झैंग है और लडकी ने अपनी माँ से पूरी कैफियत जयान की. ये करामत देखकर वो यहुदिया और उस का शौहर झौरन ही कलमअे-शहादत पढ कर दौलते धमान से मालामाल हो गये.

सुजहानल्लाह ! सय्यदा बीबी नफीसा का दरे पाक जिस्मानी रुहानी मरीजों के लिये दारे शिफा है के ला-घलाज बीमार शिफायाज होते हैं और कडर काफिर मुसलमान होते हैं. घस करामत ने न सिर्फ़ मिस्र जल्कि अतराफ़ो अकनाफ़ में आप के नाम को मशहूर कर दिया.

दूर दरार से लोग अपनी दीनी ओर दुन्यवी मुरादें ले कर आप के मुकदस दर पर हाजिर होते और जा-मुरादो-शाद शाद अपने मकान पर वापस जाते थे. लोगों का हुजूम रोज़ जरोज घस कदर जटता गया के आप के अवरदो वजाधक़ में जलल होने लगा. मजबूर हो कर आप ने मिस्र की सुकूनत तर्क इरमाने का धरादा कर लिया.

लोगों की बीबी नफीसा से मिस्र न छोडने की गुगारिश

सय्यदा बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा ने मिस्र की सुकूनत तर्क करने का धरादा इरमाया है, ये जबर झैलने से अेहले मिस्र में सप्त वहशत और परेशानी पैदा हुध. लोग मिस्र के अमीर के पास हाजिर हो कर अर्ग करने लगे के सय्यदा बीबी नफीसा का मिस्र से तशरीफ़ ले जाना हमारे लिये मेहज़मी और कम नसीबी का जाधस है. आप किसी तरीके से मोहतरमा सय्यदा को रोक लीजिये. अमीरे मिस्र आप के दरे अकदस पर हाजिर हुये और आप से मिस्र छोडने का सज्ज दरियाइत किया. धरशाद इरमाया के लोगों का हुजूम रोज़ जरोज जटता जाता है, जिस से मेरे अवरदो-वजाधक़ में जलल होता है और दूसरा सज्ज ये है के मेरे मकान में गुंजाधश बी जहुत कम है. अमीरे मिस्र ने अर्ग की के आप ने मकान की तंगी का जे गिक़ इरमाया है, घस सिलसिले में मेरी अर्ग है के घस मथामले में आप जिलकुल किक़ न इरमायें. मैं अपना अेक कुशादा मकान आप की भिदमत में नजर करता हूं. उम्मीद है के मेरी नाथीज नजर को आप शई कजूलियत से नवाजें.

રહી બાત લોગોં કે હુજૂમ કી, ઘસ કા એક હી ઇલાજ હૈ કે હફ્તે મેં સિફ દો દિન મખ્લૂકે ખુદા કો ફેંગ લેને કા મોકા દિયા જાએ. શમ્બા યાની સનીચર ઓર ચહાર શમ્બા યાની બુધ કા દિન મુકરર ફરમાયા જાએ. સચ્ચદા ઘસ બાત પર રઝામંદ હો ગઈ.

આપ કી ક્રામત - પરિન્દે કા સૂત કી ગઠરી લે કર ઉડ જાના. ઘસ સે તાજિરોં કી કશ્તી કા ફૂબને સે બચના ઓર બુદિયા કો સૂત કી કીમત મિલના

એક બુદિયા ઓરત કે શોહર કા ઇન્તકાલ હો ગયા થા. ઉસ કી ચાર લડકિયાં થીં. ઉન યતીમ લડકિયોં કી પરવરિશ કા સિફ યહી હીલા થા કે વો ચારોં લડકિયાં એક હફ્તે તક સૂત કાંત કર અપની વાલિદા કો દેતીં. વો બાઝાર મેં જા કર ઉસ કો ફરોખ્ત કર કે ઉસ કી કીમત કી રકમ કે દો હિસ્સે કરતી. એક હિસ્સે સે વો ઇતના અનાજ ખરીદતી કે હફ્તે તક ઉન કો કાફી હો ઓર એક હિસ્સે સે સૂત ખરીદતી, તાકિ ઉસે કાંત કર ફિર અગલે હફ્તે કો બેચ સકે. ઇસી તરહ ઉન કી બસર ઓકાત હોતી થી. એક મરતબા વો બુદિયા અપની લડકિયોં કે કાતે હુએ સૂત કો એક સુખ કપડે મેં બાંધ કર બાજર કો જા રહી થી કે નાગાહ એક બડા પરિંદા આયા ઓર કપડે મેં લિપટા હુવા સૂત ઉચક કર લે ગયા. ઇસ હાદસે કા બુદિયા કો ઇસ કદર રંજ હુવા કે વો આહો-જારી કર કે રોને લગી. લોગ ઉસ કે ઇર્દ-ગિર્દ જમા હો ગએ. વો બુદિયા ઝોર ઝોર

સે રોતી થી ઓર કહતી થી કે અબ મેરી યતીમ લડકિયોં કી પરવરિશ કેસે હોગી ? એક શખ્સ ને ઉસ બુદિયા સે કહા કે તુમ અપની ઇસ મુસીબત કો બીબી નફીસા તાહેરા કી ખિદમત મેં અર્ગ કરો. ઇન્શાઅલ્લાહ તુમ્હારી મુશ્કિલ કો વો હલ ફરમા દેંગી.

બુદિયા રોતી હુઈ સચ્ચદા કી ખિદમતે આલી મેં હાઝિર હુઈ ઓર અપની દાસ્તાને ગમ બઝબાને દર્દ વ અલમ અર્ગ કી. સચ્ચદા ઉસ કી દાસ્તાન સુનકર બહુત ગમગીન હુઈ. બંદા-નવાઝ રબુલ આલમીન કી બારગાહે બે-નિયાઝ મેં દુઆ કે લિએ હાથ ઉઠાએ ઓર ઇસ તરહ દુઆ કી કે “યા-મન અલા કુલ્લે શયઘન કદરા ઇરહમ-અમતકલ-અજૂઝા-વ-બનાતહા” યાની “એ ! હર ચીઝ પે કાદિર ખુદાએ તઆલા ! અપની ઇસ બંદી ઓર ઇસ કી લડકિયોં પર રહમ ફરમા” હઝરત સચ્ચદા ને ખુદાએ તઆલા કી બારગાહ મેં બુદિયા કે લિએ દુઆ ફરમાઈ કે ઇસ કી મુશ્કિલ આસાન ફરમા ઓર ઉસ કી લડકિયોં પર ફઝ્લો-કરમ ફરમા. દુઆ સે ફારિગ હો કર આપ ને બુદિયા સે ફરમાયા કે બૈઠ ઓર દેખ કે અલ્લાહ તઆલા અપની શાને કરીમી ઓર રહીમી કા કરિશમા કિસ તરહ દિખાતા હૈ. આપ કે હુકમ કે મુતાબિક બુદિયા આપ કે દરે દૌલત કે દરવાઝે પર બૈઠ ગઈ. યતીમ બચ્ચોં કી ભૂખ કા ખયાલ ઉસે બેતાબો-બેચૈન કિએ હુએ થા. થોડી દૈર કે બાદ તાજિરોં કા એક કાફલા હઝરત સચ્ચદા તાહેરા બીબી નફીસા રદીઅલ્લાહો તઆલા અન્હા કી ખિદમત મેં હાઝિર હુવા. સચ્ચદા ને કાફલે વાલોં સે હાલ દરિયાઈત ફરમાયા.

काइले वालों ने अर्ग किया के अे गुले गुलजारे रसूले मकबूल ! अे इतमी यमन के महकते हुअे कूल ! फुदाअे तआला की भेशुमार भरकते तुम पर नाज़िल हों. हम तिज्जरात पैशा लोग हें. अरख्नाभे तिज्जरात कश्ती में लाद कर हम मिस्र की तरफ आ रहे थे के अरख्नाअे राह हमारी कश्ती में अेक सूराभ हो गया. जिस की वजह से पानी कश्ती में आने लगा. उस सूराभ को भंड करने की हम ने बहुत तदबीरें कीं, लेकिन किसी तरह वो भंड न होता था. हमें डूब जाने का भौंइ दामनगीर हुवा, तो हम ने आप के नाम की नज़र मानी और आप का वसीला पैश कर के अल्लाह तआला की जनाभ में दुआ की के हम सहीह सालिम मंज़िले मकसूद तक पहुंचे जायें. अयानक अेक भडे परिन्टे ने उडते हुअे अेक सुर्भ गठरी के जिस में काता हुवा सूत लिपटा था, हमारी कश्ती में झेंकी. हम ने उसे ताईदे गैबी और भरकते नज़ीसा बीबी समज़ कर सूराभ के मुंह पर रभ दिया. सूराभ झौरन भंड हो गया और हम सहीह सालिम मिस्र पहुंचे गये. ये पांच सौ दिरहम आप की मन्नत के हें. लिल्लाह कुबूल इरमाघये. सय्यदा ने कुबूल इरमा कर उस जुदिया को जुलाया. जुदिया हाज़िर हुअे. सय्यदा ने जुदिया से दरियाइत इरमाया के हइते में काता हुवा सूत कितनी कीमत पर इरोप्त होता था ? जुदिया ने अर्ग की के बीस दिरहम कीमत मिलती थी. सय्यदा ने घरशाद इरमाया के फुदा की कुदरत देभ. अेक दिरहम के भदले पखीस दिरहम तुम को अता इरमाअे हें.

और आप ने वो तमाम रकम पांच सौ दिरहम जुदिया को अता इरमा दी. जुदिया का गम फुशी में भदल गया. सय्यदा को दुआअे देती हुअे फुशी फुशी अपने मकान वापस हुअे. घस वाकिया से सय्यदा पर अेक किस्म की रिक्कत तारी हो गअे और आप बहुत दैर तक रोती रहीं.

“करामत - कैद से आज़ादी हासिल होना”

अेक शप्स ने अेक कितानिया औरत से शादी की. उस से अेक लडका पैदा हुवा. जभ वो लडका जवान हुवा तो हरबी काइरों ने उसे कैद कर लिया. उस के मां भाप को लडके का कुछ पता मालूम न हो सका. वो अपने प्यारे लडके की फुदाई में तडप तडप कर वक्त गुज़ारते थे. अेक दिन उस कितानिया औरत ने अपने शौहर से कहा के हमारे शहर में सय्यदा बीबी नज़ीसा ताहेरा रौनक अइरोज़ हें. उन की करामतों का चर्चा तमाम मुसलमानों भल्कि गैर-मुस्लिमों में भी मशहूर है. आप जा कर उन से अर्ग अहवाल करो. अगर उन की दुआ की भरकत से मेरा लडका वापस आ जायेगा, तो मैं तुम्हारे दीन में दाखिल हो जाउंगी. उस कितानिया औरत का शौहर सय्यदा बीबी नज़ीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा की फिदमत में हाज़िर हुवा और लडके की गुमशुदगी की कैफियत अर्ग की और लडके के वापस आने की दुआ का आप से तालिभ हुवा. हज़रत सय्यदा ने दुआ इरमाअे और घरशाद इरमाया के जाओ ! आज रात को तुम्हारा लडका तुम्हारे मकान पर पहुंचे जायेगा.

જબ રાત હુઈ તો ઉન કે મકાન કે દરવાઝે કી ઝંજીર કિસીને ખટખટાઈ. ઉસ ઓરત ને દરવાજા ખોલા, તો ક્યા દેખતી હૈ કે ઉસ કા ગુમશુદા લડકા સામને ખડા હૈ. અપને જિગર કે ટુકડે કો વાપસ પા કર વો ઓરત ફતે મુસરત સે ઝૂમ ઉઠી. અપને પ્યારે બેટે કો સીને સે લગાયા ઓર ઉસ કે ગુમ હોને કા હાલ દરિયાફત કિયા. લડકે ને કહા કે મુઝે હરબી કાફિરોં ને કૈદ કર લિયા થા. આજ કૈદખાને કે દરવાઝે પર ખડા થા ઓર જેલર ને જિસ કામ કે કરને કા હુકમ દિયા થા. ઉસકી તામીલ કી તય્યારી મેં થા કે અચાનક એક હાથ મુઝ પર પડા ઓર આવાઝ આઈ કે ઘસ કો કૈદ સે આઝાદ કરદો. ઘસ આવાઝ કે સાથ હી મેરી બેડિયાં ટૂટ ગઈ ઓર મેં કૈદ સે આઝાદ હો ગયા. આવાઝ દેને વાલે ને યે ભી આવાઝ દી કે ઘસ લડકે કે હક મેં બીબી નફીસા કી દુઆ મકબૂલ હૈ. ફિર મુઝ પર બૈહોશી તારી હો ગઈ. જબ હોશ આયા, તો ક્યા દેખતા હૂં કે મેં અપને ઘસ મોહલ્લે મેં ખડા હૂં. ઘસ કરામત કો દેખ કર વો કિતાબિયા ઓરત ઓર સાથ મેં ઉસ મોહલ્લે કે સતર (૭૦) મકાન કે બાશિંદોં ને કલ્મએ-શહાદત પઠ કર દીને ઘસ્લામ કબૂલ કિયા ઓર દોલતે ઈમાન સે માલા માલ હુવે.

હઝરત સય્યદા બીબી નફીસા તાહેરા રદીઅલ્લાહો તઆલા અન્હા કી મઝકૂરા બાલા કરામત કે અલાવા ઐસી બેશુમાર કરામાત હૈં, જિન સે આપ કા ફઝ્લો-કમાલ ઓર બારગાહે રબૂલ ઈઝ્ઝત મેં આપ કી મકબૂલિયત કા પતા ચલતા હૈ. આપ પાકીજા નફ્સ ઓર સુતૂદા સિફાત, આબિદા, ઝાહિદા, ઓર કામેલા વલિય્યા થીં. ઝોહ્દો-તકવા

ઓર ઘબાદતો-રિયાઝત મેં આપ ને અપની ઝિંદગી કા એક એક લખ્લા ખુલૂસે નિચ્યત ઓર અલ્લાહ વ રસૂલ કી રઝા વ ખુશનૂદી હાસિલ કરને કે લિએ સર્ફ ફરમાયા. આપ કી અઝમત ઓર બુઝુર્ગી કા મિલ્લતે ઘસ્લામ કે અઘમ્મએ કિરામ બુઝુર્ગોં ઓર ઉલ્મા ને ભી એતરાફ કિયા હૈ. આપ કા ફૈઝ હર આમો-ખાસ પર જરી થા. મિલ્લતે ઘસ્લામિયા કે અઝીમ અઘમ્મએ કિરામ આપ કે અકીદતમંદ થે ઓર હુસૂલે નેઅમતો બરકત કે લિએ આપ કી ખિદમત મેં રુખૂ કરતે થે.

હઝરત ઈમામ શાફ્ઈ કો આપ સે અકીદત

હઝરત ઈમામ શાફ્ઈ રદીઅલ્લાહો તઆલા અન્હો જબ બીમાર હો જતે, તો તલબે દુઆ કે લિએ આપ કી ખિદમત મેં કિસી ખાદિમ કો ભેજ દેતે. સય્યદા બીબી ઈમામ શાફ્ઈ કે લિએ દુઆએ શિફા ફરમા દેતીં. અભી વો ખાદિમ લોટ કર ઈમામ શાફ્ઈ કી ખિદમત મેં પહુંચતા ભી નહીં કે ઈમામ શાફ્ઈ કો મર્ઝ સે શિફા હાસિલ હો જતી. જબ ઈમામ શાફ્ઈ ને મર્ઝે વફાત મેં તલબે દુઆ કે લિએ હઝરત સય્યદા કી ખિદમત મેં ખાદિમ ભેજ તો સય્યદા ને દુઆએ શિફા કરને કે બજાય ફરમાયા “મતઅહુલ્લાહો બિન્નજરે-ઘલા-વજહિદિલ-કરીમ” યાની “અલ્લાહ તઆલા ઈમામ શાફ્ઈ કો અપને દીદાર સે મુશર્ફ ફરમાએ”. જબ ખાદિમ વાપસ આયા, તો ઈમામ શાફ્ઈ રહમતુલ્લાહે તઆલા અલયહ ને ખાદિમ સે ફરમાયા કે ક્યા આજ સય્યદા ને મેરે લિએ દુઆએ શિફા નહીં ફરમાઈ ? ક્યોં કે તુમ વાપસ

મકાન પર પહુંચ ગએ હો ઓર અભી તક મુઝે શિફા નહીં હુઈ. ખાદિમ ને અઝ કિયા કે હુઝૂર ! આજ સચ્ચદા બીબી નફીસા ને દુઆએ શિફા કે બજાએ ઇસ તરહ દુઆ કી હે. હઝરત ઇમામ શાફઈ સમઝ ગએ કે અબ મેરી વફાત કા વકત કરીબ હૈ ઓર ઇસી લિએ સચ્ચદા ને શિફા કે લિએ દુઆ નહીં ફરમાઈ. ફૌરન વસિચ્ચત નામા તેહરીર ફરમાયા ઓર સચ્ચદા કી ખિદમત મેં કહલવાયા કે મેરે જનાઝે કી નમાઝ ઝરૂર પઢે. ગઝ ઇસી મઝ મેં ઇમામ શાફઈ કા હિ. સ. ૨૦૪ મેં વિસાલ હુવા. આપ કા જનાઝા જબ સચ્ચદા કે મકાન કે કરીબ પહુંચા, તો અમીરે મિસ્ર ને વહીં પર હી નમાઝે જનાઝા પઢને કા હુકમ દિયા. યુનાંચે હઝરત સચ્ચદા કે મકાન કે સામને વસીઅ મૈદાન મેં ઇમામ અબૂ યાફૂબ ને નમાઝે જનાઝા કી ઇમામત કી ઓર ઝમ્મે ગફીર ને આપ કી નમાઝે જનાઝા પઢી. હજરહા ઓલિયાએ કિરામ ઓર ઉલમાએ ઇઝામ ને નમાઝે જનાઝા મેં શિરકત ફરમાઈ. સચ્ચદા બીબી નફીસા રદીઅલ્લાહો તઆલા અન્હા ને પઢે મેં રેહતે હુવે જનાઝે કી નમાઝ મેં શિરકત ફરમાઈ. એક બુઝુર્ગ ફરમાતે હૈં કે નમાઝે જનાઝા કે બાદ મૈંને ગૈબ સે એક નિદા સુની કે “ઇન્લ્લાહ-કદ-ગફરા-લે-કુલ્લે-મન-સલ્લા-અલશ્શાફઈ-બિશ્શાફઈ-વ-ગફરા-લે-શાફઈ-બિરરાલાતે સચ્ચદતિન્નફીસા” યાની “અલ્લાહ તઆલા ને ઇમામ શાફઈ કે વસીલે સે હર ઉસ શખ્સ કો બખ્શ દિયા, જિસ ને ઇમામ શાફઈ કે જનાઝે કી નમાઝ પઢી ઓર ઇમામ શાફઈ કો સચ્ચદા નફીસા કી નમાઝ કી વજહ સે બખ્શ દિયા”. જો ઉન્હોંને ને ઇમામ શાફઈ કે જનાઝે કી પઢી.

હાજત પૂરી હોને કે લિએ બીબી નફીસા કી મન્નત

આરિફ બિલ્લાહ ઇમામે અજલ અલ્લામા અબ્દુલ વહ્હાબ શેઅરાની રહમતુલ્લાહે તઆલા અલયહ અપની કિતાબ મુસ્તતાબ “તબકાતે કુબ્રા” મેં હઝરત અલ્લામા મુહમ્મદ શાઝીલી રહમતુલ્લાહે તઆલા અલયહ કે અહવાલ મેં ફરમાતે હૈં કે હઝરત મુહમ્મદ શાઝીલી રહમતુલ્લાહે તઆલા અલયહ ફરમાતે હૈં કે મૈંને ખ્વાબ મેં હુઝૂરે અકદસ સલ્લલ્લાહો તઆલા અલયહે વસલ્લમ કી ઝિયારત કી. આપ ને ફરમાયા કે જબ તુમ્હેં કોઈ હાજત હો ઓર ઉસ કા હોના યાહો, તો સચ્ચદા નફીસા તાહેરા કે લિએ કુછ મન્નત માન લિયા કરો, અગરચે એક હી પૈસા, તુમ્હારી હાજત પૂરી હો જાએગી. સુબહાનલ્લાહ ! ઇસ ઇઝ્ઝતો-મકબૂલિયત કો દેખિએ કે ખુદ સરકારે દો આલમ સલ્લલ્લાહો તઆલા અલયહે વસલ્લમ સચ્ચદા બીબી નફીસા તાહેરા રદીઅલ્લાહો તઆલા અન્હા કે લિએ મન્નત માનને કો વસીલા કઝાએ હાજત ફરમાતે હૈં.

સચ્ચદા તાહેરા બીબી નફીસા કી રહમત

આપ ને અપની કબ્રે મુબારક અપને હી મુબારક હાથોં સે તામીર ફરમાઈ ઓર ઉસ મેં એક સૌ નવ્વે (૧૯૦) કુરઆને અઝીમ ખત્મ ફરમાએ. મુસલસલ મુજહિદાત વ રિયાઝત કી વજહ સે આપ કા જિસ્મ શરીફ કમઝોર હો ચુકા યા. અબ બીમારી ને ઝોફ વ નકાહત ઓર ભી બટા દીએ. રમઝાનુલ મુબારક કા મહીના યા, મગર શદીદ બીમારી ઓર

कमजोरी की हालत में भी आप रोगी रहती थीं और रोगी कमा होने न देती थीं. हकीमों ने बहुत कुछ कहा और मशवरे दीये के सख्यदा ! अज रोगी छोड दें, वर्ना बीमारी भट जाने का भौङ है. आप ने इरमाया के हरगिज नहीं. में तीस साल से अपने करीम और रहीम मौला से यही अर्ज करती हूं के घलाहल अलामीन ! मेरी इह रोगे की हालत में परवाज हो. ये मेरी दिली आरजू और तमन्ना है. तो ये लोगो ! क्या तुम मेरी घस आरजू को जाक में मिलाना चाहते हो ? फिर आप ने अरजी का ये शेअर घरशाद इरमाया.

“घररेङ्क-अन्नी-तजीजी-व-अदडीनी-व-हजीजी”
 यानी **“हकीम को मुज से दूर हटाओ और मुझे मेरे हजीज पर छोड दो.”** रमजानुल मुबारक के दरमियानी अर्से तक यही हालत रही. जब विसाल का वक्त करीज आया. आप ने कुरआन शरीफ की तिलावत शुरू इरमा दी. और जब आप तिलावत करते हुये घस आयत पर पहुँची:-
“लहुम- दारुसलामे-घन्दा-रजिजहिम-व-हुवा-वलिख्योहुम-गेमा-कानू- यअमलून” (पारा : ८, सूरतुल अनआम, आयत नं : १२७) तर्जुमा: **“उन के लिखे सलामती का घर है. अपने रज के यहाँ और वो घन का मौला है. ये उन के कामों का इल है”** (कन्जुलघमान) इस वक्त सख्यदा पर गशी तारी हुय. आप की भतीजु इरमाती हैं के इस वक्त में सख्यदा से लिपट कर रोने लगी कि, आह ! ये नूरानी सूरत चंद लम्हों के जाद पदपोश हो जायेगी. सख्यदा ने कल्मये शहादत पढा और इहे मुबारक आ'ला घल्लिख्यीन में पहुँची. (घन्ना लिल्लाहे व घन्ना घलयहे राजेडिन)

आप की वफ़ात शरीफ़ के रोज़ मिस्र का कोय घर औसा न था के जिस से सख्यदा के गम में रोने की आवाज न आय हो. आप की वफ़ात हि.स. २०७ रमजानुल मुबारक के अशरये-ओसत में हुय.

आप को मिस्र में दफ़न करने का लोगो का घरार

हजरत सख्यदा ताहेरा जीजी नज़ीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा का विसाल हुवा, तो आप के जाविंद मोहतरम हजरत सख्यद घरहाक रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने आप को मदीना मुनव्वरा के मुकदस क़दस्तान **“जन्नतुल भकी”** में दफ़न करने का घरदा इरमाया. अहले मिस्र को ये मालूम कर के बहुत ही रंजे-मलाल हुवा. लोगो ने हजरत सख्यद घरहाक से अर्ज की के हुज़ूर ! जराहे करम मोहतरमा-मगज़ूरा सख्यदा के जिस्मे पाक को मिस्र ही में दफ़न किया जाये. लेकिन आप ने घन्कार इरमा दिया. जब हजरत सख्यदना घरहाक सोये तो प्वाज में हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम शहनशाहे कौनेन के जमाले जहांआरा के दीदार से मुशर्रफ़ हुये. आप ने घरशाद इरमाया के ये घरहाक ! अहले मिस्र को नाराज मत करो और जीजी नज़ीसा ताहेरा को मिस्र ही में दफ़न करो. युनांचे आप को मिस्र में ही दफ़न किया गया. आप का मज़ारे पाक मरजये जलाघक है. जडे जडे औलियये-किराम व मशाएणे एज़ाम आप के मज़ारे पाक पर हाज़िर हो कर कुयूगो-भरकात हासिल करते हैं.

आप का मज़ार कुयूँो ढरकात का गंुना

हज़रत सय्यदा ताहेरा ङीढी नईसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा का मज़ार शरीफ़ हुसूले मुराद व मकसद के लिअे मुजर्रब और तिरयाक है. ढेशुमार हाजतमंदों की हाजत रवाइ आन की आन में आप के आस्तानअे आलिया से हुइ हैं. हम ने हज़रत सय्यदा के हालाते ग़िंदगी और सीरते तय्यबा को जिस मुस्तनद और मोअतढर किताब से अफ़ा किया है, उस किताब का नाम “नूरुल-अढसार-ई- मनाकिढे-अहले-ढैतुन्नभिथिल-मुफ़्तार” है. इस किताब के मुसन्निफ़ धमामे अजल, अल्लामा शरनढलानी रहमतुल्लाहे तआला अलयह हैं. इस किताब की वजहे तसनीफ़ में अल्लामा शरनढलानी तेहरीर इरमाते हैं के मेरी आँषों में आशोढअे-यश्म का मर्ज़ लाहिक हुवा. जिस की वजह से आँषों में शिदत से दर्द और कुलइत थी. मैंने ङहुत ही धलाज और मआलेज किया, लेकिन मर्ज़ और दर्द में कुछ ढी धइका या इयदा न हुवा. ङिल-आपिर दर्द से ङेथैन और परेशान हो कर हज़रत सय्यदा के मज़ारे पाक पर हाग़िर हो कर मैंने धस्तिगासा किया और मन्नत मानी के अगर सय्यदा ङीढी नईसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा के वसीले और तुइल से मुग़ को शिइा हासिल हुइ, तो अेक किताब अहले ङैत अतहार के इग़ाधल व मनाकिढे-अहवाल में तस्नीफ़ कइंगा. इस मन्नत का मानना था के चंढ रोग में मुग़ को शिइाअे

कामिला हासिल हो गइ. लिहाज़ा मैंने अपनी मन्नत पूरी करते हुअे ये किताब अहले ङैते किराम के मनाकिढ में तेहरीर की.

अल्लामा शरनढलानी के अलावा मिल्ते धरलामिया के दीगर अमीम ङुगुगो ने ढी हज़रत सय्यदा के मज़ारे अकदस से ङेशुमार कुयूँो ढरकात हासिल किअे हैं. कइ ना-मुरादों के ङाली दामन आप के तुइल गौहरे मुराद से ढर गअे हैं और ला-धलाज ङीमारियों के मरीजों ने आप के आस्ताने की हाग़री के तुइल शिइा व सहत हासिल की हैं.

**सय्यदा की सीरत मिल्ते
धरलामिया के लिअे मशअले राह**

अल्लाह तढारक व तआला की ङेशुमार नेअमतें नाग़िल हों, उस मुकदस सय्यदा ग़ाहिदा आढिदा ताहेरा नईसा ङातूने अहले ङैत के मज़ार पर, जिस ने अपनी सीरते पाक को शरीअत की धताअत और धढादतो-रियाग़तो-ग़ोहदो-तकवा व ङोइके ङुदा का अमली नमूना ङनाया और सढावतो-ईसार का मिसाली पैकर ङनकर मिल्ते धरलामिया को ग़िंदगी के नरढुल-अैन से आगाह कर के इस्व-अे-हसना का अमली दर्स दिया. सय्यदा के हालाते ग़िंदगी का मुतालेआ करने पर यही साढित होता है के आप ने हमेशा अल्लाह तआला की धढादत में शढ ङेदारी इरमाइ और अय्यामे ममनूआ के अलावा हमेशा

दिन को रोका रखा. नफ्स को मशकूत देना और ज्वाहिशाते नफ्स को मार कर दुनिया की लग्नतों और ऐशो-आराम से दूर रहना, ये कोई आसान बात नहीं. एक हम भी हैं के पूरी रात बेदार रह कर घुमावतो-रियाजत करना तो दर किनार, धशा और इज की नमाज भी हमारी तबीयतों पर भारे गिरां मावूम होती है. नपाकिल तो नपाकिल हैं, बल्कि रमजानुल मुबारक के इर्ग रोजे भी हमारे सरकश नफ्स को पहाड की तरह भारी लगते हैं. और धस पर सितम ये है के रमजानुल मुबारक में अलानिया तौर पर जागरों में और सदकों पर जाने पीने और पान बीडी का धस्तेमाल कर के माहे रमजानुल मुबारक की अजमत और हुरमत का लिहाज भी नहीं करते. अकौल हजरत रजा अरैवी :-

शर्म नही, पौके पुदा-ये भी नहीं, वो भी नहीं.

हजरत सय्यदा ने अपनी गिंदगी में तीस हज अदा इरमाये और धन में से अकसर हज आप ने पैदल सफर कर के अदा इरमाये. आप का ये किरदार मिल्लत के लिये सबक आमोज है. आज हम हवाई जहाज की सहूलत के दौर में आसान सफर होने के आवजूद और माली व जिस्मानी धस्तिताअत होने के आवजूद भी हज के अहम इरीजे को अदा करने से गइलत भरतते हैं. उम्र में एक भरतजा इर्ग हज अदा करने की तौफीक नहीं होती, बल्कि हजारां हीले और अहाने पेश करते हैं. लेकिन माले दुनिया के हुसूल के लिये दूरो दराज के तिजरती सफर करने में

कोई दुशवारी नहीं होती. दुन्यवी सफर में तमाम किस्म की सउिअतें और मुसीअतें अर्दाशत करने के लिये हम वक्त तनो-जन से तय्यार हैं, लेकिन दौलते उकजा और रजाये मौला के हुसूल के लिये डेट या दो माह का सफर करने में काहिली की जाती है.

हजरत सय्यदा का अपने हाथ से अपनी कफ़ तय्यार करना और उस पर एक सौ नव्वे (१८०) कुरआन शरीफ़ अत्म करना, किस कदर सबक आमोज है. हम से तो साल भर में भी एक कुरआन मजुद अत्म नहीं होता. तिलापते कुरआन मजुद के लिये हमारे पास वक्त नहीं, लेकिन इल्मी अइसाने, आशिकाना नापिल, जजआते शहवत को उभारने वाले इहश अइसाने, लग्न और गूडे किस्से कलानियां व नीज अफभार जीनी, टी. वी., वीडियो वगैरा लहवो-लहभ के लिये काफ़ी वक्त है. लेकिन अइसोस ! आज के इेशन याइता और माडर्न मुसलमान के पास दीनी किताबें पढने के लिये और कुरआने अजुम की तिलापत करने के लिये वक्त नहीं है. हमें सय्यदा की सीरत से पन्धो नसीहत हासिल करना चाहिये.

हजरत सय्यदा का अपनी नजर का तमाम मालो-दौलत उस जेवा जुदिया को दे देना और पांच सौ दिरहम में से अपने अर्थ के लिये एक दिरहम भी न लेना, मिल्लते धस्लामिया को सजावत, धसार, कुरआनी, हमदई और धप्लास का दर्स दे रहा है. आज तो ये हालत है के लोगों की निच्यते धतनी अराज होगई हैं के धल्ला माशा अल्लाह ! हर वक्त यही सोच व इंक रहती है किसी का

माल किस तरह छीन लूं. देने के जजमे लेने की नियत लगी रहती है. और ये भी देखा जाता है के सभापत में भी अक्सर रिया, और नामो-नमूद का जग्गा कारगर होता है. धमलास, पुलूस और विल्लाहियत जहुत कम नजर आती है. हमें चाहिये के हररत सय्यदा के मुप्लिसाना किरदार की पैरवी करें और अपने हर काम में पुलूसे नियत धृत्तियार करें और अपने मो'मिन भाईयों की हमदर्दी का जग्गा अपने दिल में जिंदा रखते हुये ईसारे कुरआनी और सभापत को धृत्तियार करें.

सय्यदा जीजी नफीसा के नाम की मन्नत

हररत सय्यदा के नाम की मन्नत हमारी मुश्किलात के हल के लिये निहायत ही मुजर्रज वसीला है. धमामे अजल सय्यदी अल्लामा शागीली रहमतुल्लाहे तआला अलयह को हुमूरे अकदस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम का प्वाज में धरशाह इरमाना के जज तुम्हें कोई हाजत पैश हो, तो सय्यदा नफीसा ताहेरा की नजर मानो. हुमूरे अकदस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वल्लम के धरशाह मुजारक से सय्यदा जीजी नफीसा की जलालत व शानो-उलू मरतजा साजित होने के साथ साथ ये भी साजित होता है के ओलिया-अ-किराम के नाम की नजरो-न्याज जग्ग और मुस्तहसन है. अलावा अर्गी धस प्वाज को धमामे अजल अल्लामा अब्दुल वह्हाज शेअरानी रहमतुल्लाहे तआला अलयह ने अपनी मोअतजरो-मुस्तनद

किताजे मुस्तताज "तजकते कुदा" में नकल इरमाया है. यही धस के सिद्को-सदाकत की दलील है.

अेक जग्गी अम्र की तरइ निशान देही कर देना जग्गी है के जो नजरो-न्याज का लइज जोला जाता है, वो मुहावरतन है और धस से मुराद वो हदिया या ईसाले सपाज है, जो इन की हयाते जाहेरी, प्वाह इन की हयाते जातेनी में इन की जिदमत में पैश किया जाता है. धस के जवाज में कतअन कोई शक व शुबह नहीं. धस के जग्ग होने पर अकाजिर मिलते धरलामिया और मशाधजे तरीकत का धतेइक है.

अल्लाह तजारक व तआला हर सुन्नी मुसलमान के दिल में अपने महजुजे आजम सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम और आप की मुकदस आल की और ओलिया-अ-किराम की सय्यी महजुजतो अजमत अता इरमाजे और इन के नकशे कदम पर चलने की तौइक अता इरमाजे. आमीन या रजल आलमीन

